Navarna Mantra Sadhana नवार्ण मंत्र साधना

नवार्ण मन्त्र-साधना

21

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

जापकों को नवार्ण मन्त्र की महत्ता के विषय में कुछ भी बताना व्यर्थ है। यह मन्त्र, मन्त्रराज की संज्ञा से विभूषित है। इस मन्त्र का जाप करने से भगवती की असीम कृपा साधक को प्राप्त होती है। साधक को चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति इस के जप से प्राप्त होती है।

सामान्यत: इस मन्त्र का जप करने से निम्नलिखित लाभ साधकों को प्राप्त होते हैं।

✦ फल ✦

१. किसी भी प्रकार का कोई कष्ट इस मन्त्र का जप करने वाले साधक पर नहीं आता है।
२. ऋण, मुक्ति, रोग-मुक्ति के लिए इसका साधन उत्तम है।
३. शत्रुओं अथवा बाह्य संकटों से मुक्ति हेतु।
४. आसुरी शक्तियों से रक्षा।
५. धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति हेतु।

अत: सभी साधकों को चाहिये कि वो इस मन्त्र का जप अवश्य करें।

✦ विनियोग ✦

"ॐ अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु रुद्रा ऋषय: गायत्र्युष्णिगनुष्टुपश्छन्दांसि, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता:, ऐं बीजं ह्रीं शक्ति:, क्लीं कीलकम् श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।"

✦ ऋष्यादिन्यास ✦

ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नम: शिरसि।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दोभ्यो नम: मुखे।
श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नम: हृदि।

ऐं बीजाय नमः गुह्ये।
ह्रीं शक्तये नमः पादयो।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
अब मूल मन्त्र "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" से हाथों की शुद्धि कर करन्यास करें।

✦ करन्यास ✦

१. ॐ ऐं अगुष्ठाभ्यां नमः।
२. ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
३. ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः।
४. ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
५. ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
६. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

✦ हृदयादिन्यास ✦

१. ॐ ऐं हृदयाय नमः।
२. ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
३. ॐ क्लीं शिखायै वषट्।
४. ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।
५. ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
६. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

✦ अक्षरन्यास ✦

१. ॐ ऐं नमः शिखायाम्।
२. ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे।
३. ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे।
४. ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे।
५. ॐ मुं नमः वामकर्णे।
६. ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे।
७. ॐ यैं नमः वामनासापुटे।
८. ॐ विं नमः मुखे।
९. ॐ च्चें नमः गुह्ये।

अब मूल मन्त्र से आठ बार व्यापक न्यास करें। (दोनों हाथों से सिर से लेकर पैरों तक के सभी अङ्गों का स्पर्श करें) फिर सभी दिशाओं में चुटकी बजाते हुए दिङ्न्यास करें–

✦ दिङ्न्यास ✦

१. ॐ ऐं प्राच्यै नमः।
२. ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः।
३. ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः।
४. ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
५. ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः।
६. ॐ क्लीं वायव्यै नमः।
७. ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
८. ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
९. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः।
१०. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

✦ ध्यान ✦

खड्गं चक्र गदेषुचापपरिधाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं सदंधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तै प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥
घण्टा शूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्धतीं धनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥३॥

✦ भावार्थ ✦

भगवती महाकाली का मैं स्तवन करता हूँ, उनके दसों हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिध, शूल, भुशुण्डि मस्तक और शङ्ख हैं, उनके तीन नेत्र हैं, उनके सभी अङ्ग आभूषणों से युक्त हैं, उनके शरीर की छवि नीलमणी के समान है। वे दस मुख तथा दस पैरों से युक्त हैं। कमल जन्मा ब्रह्माजी ने जिन मधुकैटभ को मारने के लिए उनकी स्तुति की थी।

मैं कमलासन पर विराजमान प्रसन्नमुखा, महिषासुर का वध करने वाली भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूँ, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और सुदर्शन चक्र धारण करती हैं।

जो अपने कर-कमलों में घण्टा, शूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं, शरद ऋतु के पूर्ण शोभायुक्त चन्द्रमा के समान जिनकी मनोहर छटा है, जो तीनों लोकों की आधारभूता तथा शुम्भ आदि दैत्यों का मर्दन करने वाली हैं, जो गौरी की देह से उद्भूत हैं, ऐसी सरस्वती देवी की मैं स्तुति करता हूँ।

तदोपरान्त साधक मूल मन्त्र की एक माला का जप करें। यदि इस मन्त्र का पुरश्चरण करना हो तो एक लाख मन्त्रों का जप करके उसका दशांश-हवन, हवन का दशांश-तर्पण, तर्पण का दशांश-मार्जन और मार्जन के दशांश से कन्याओं व ब्राह्मणों को भोजन कराकर सन्तुष्ट करें। कन्या दस वर्ष से अधिक उम्र की न हो।

✦ मूल नवार्ण मन्त्र ✦

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।"

मन्त्र जप करने के उपरान्त दसों हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती के बायें हाथ पर जल अर्पित करें–

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादातमहेश्वरि॥

अब आसन के नीचे की मिट्टी अथवा जल अपने मस्तक पर लगाकर और आचमन कर, उठ सकते हैं।

नवार्ण मारण-मन्त्र

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे(अमुकं) रं रं खे खे मारय-मारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरू-कुरू स्वाहा।"

जप संख्या दस लाख, आसन-काला, दिशा-दक्षिण

इस प्रयोग में सबसे पहले आठ कुओं का जल लाकर ताँबे के कलश में इकट्ठा कर लेना चाहिए और इसमें बट वृक्ष के पत्ते डाल दें। नित्यप्रति इसी जल से स्नान करें।पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वीर आसन में जप करें।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

साधारणतया २१ दिनों में यह जप समाप्त हो जाना चाहिए। **अमुक** के स्थान पर उस शत्रु का नाम लें, जिसका मारण करना है।

नवार्ण महामन्त्र

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरी नवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डी महामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभविद्राविणी महिषासुरमर्दिनी धूम्र लोचन संहंत्री चण्ड-मुण्ड विनाशिनी रक्त बीजान्तके निशुम्भध्वसिंनी शुभं दर्पघ्नि देवी अष्टादश बाहुके कपाल खटंवाग शूल खड्ग खेटक धारिणी छिन्न मस्तक धारिणी रुधिर मांस भोजिनी समस्त भूत प्रेतादि योग ध्वंसिनी ब्रह्मेन्द्रादि स्तुते देवि माँ रक्ष-रक्ष मम शत्रुन् नाशय ह्रीं फट् ह्रूं फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।"

माँ भगवति को प्रसन्न करने के लिए प्रतिदिन इस महामन्त्र का जाप करें। साधक को भगवती की असीम कृपा प्राप्त होगी।

卐 卐 卐

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)